जापान में आर्थिक विकास
Economical Growth in Japan

Ashish Kumar Thakur
B.A. II, History (H) - IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

19वीं एवं 20वीं सदी में जापान के राजनीतिक इतिहास से अधिक महत्वपूर्ण एवं आश्चर्यजनक तथ्य जापान के आर्थिक विकास में दृष्टिगोचर होते हैं। अल्प समय में जापान की आर्थिक प्रगति न केवल जापान अपितु समस्त एशिया के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि थी।

(1) ~~औद्योगिक प्रगति~~ :- मेईजी पुनर्स्थापना के पश्चात 1885 ई० के पूर्व ही जापान ने पाश्चात्य अर्थ व्यवस्था, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी अपनाकर वृहत पैमाने पर औद्योगीकरण की प्रक्रिया आरम्भ की। चीन-जापान युद्ध में सफलता के पश्चात जापान के आर्थिक कायाकल्प का समय आरम्भ हुआ। जापान ने सर्वप्रथम भारी उद्योगों की उन्नति पर बल दिया। जापान में कारखानों की संख्या एवं उनमें कार्यरत मजदूरों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई।

जापान ने अपने यहाँ बिजली, इंजीनियरिंग के सामान एवं व्यापारिक जहाजों के निर्माण वाले उद्योगों की स्थापना पर विशेष बल दिया। विदेशी व्यापारियों ने भी जापानी उद्योगों की स्थापना में पूंजी निवेश किया। ~~जापानी उद्योगों की स्थापना में पूंजी निवेश किया।~~ इससे उद्योगों की स्थापना में तेजी आई। 1905 ई० से 1914 ई० के बीच जापान में रेलमार्ग की लम्बाई तिगुनी से हो गई। इसी अवधि में लोहा उद्योग का उत्पादन चौगुना एवं कोयले का उत्पादन दोगुना हो गया। प्रथम विश्व युद्ध के समय तक जापान एक प्रमुख औद्योगिक देश के रूप में उभरकर सामने आया।

1872 ई० में जापान की जनसंख्या 3.5 करोड़ थी जो 1920 ई० में बढ़कर 5.5 करोड़ हो गई। उद्योगों के विकास के साथ लोग शहरों में आए। 1925 ई० तक 22% जनता शहरों में रहती थी। 1935 ई० तक यह बढ़कर 32% हो गई। जापानी संसद डायट के निम्न सदस्य तनाकों शोजो ने 1897 ई० में औद्योगिक प्रदूषण के खिलाफ प्रथम आंदोलन छेड़ा।

Ashish

Scanned with CamScanner

(ii) यातायात :— जापान में आवागमन के साधनों पर भी विशेष ध्यान दिया गया।

1872 ई० में जापान में सर्वप्रथम रेलवे लाइन निर्माण का कार्य आरम्भ किया गया। टोक्यो से याकोहामा तक रेल लाइन डाली गई। 1894 ई० तक जापान के प्रमुख शहर रेल लाइनों से जोड़ दिए गए। इस वर्ष तक कुल 2,118 मील रेल लाइनों का निर्माण किया गया। जलयानों के निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया गया। 1868 ई० में प्रथम बार जापान में टेलीग्राफ लाइन का निर्माण किया गया। डाक विभाग की स्थापना की गई। 1877 ई० में टेलीफोन का भी जापान में आरम्भ हुआ। यातायात एवं संचार साधनों के विकास से जापान के व्यापार में भी अत्यधिक वृद्धि हुई।

(iii) व्यापार :— उद्योगों एवं यातायात के विकास ने जापानी व्यापार को समृद्ध करने में महत्व भूमिका निभाई।

जापान में 1873 ई० में राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की गई। 1879 ई० तक जापान में 151 बैंक खुल गये। इन बैंकों में कृषि बैंक, उद्योग बैंक एवं खनिज बैंक आदि प्रमुख थे।

1885 ई० में जापान बैंक [Bank of Japan] नाम से एक केन्द्रीय बैंक भी खोला गया। विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से याकोहामा स्पेशी बैंक का निर्माण किया गया। इन सभी बैंकों की स्थापना ने जापानी व्यापार में अत्यधिक वृद्धि की। विदेशी व्यापार में हुई असाधारण वृद्धि को निम्न सारणी द्वारा समझा जा सकता है।

(iv) कृषि :— मेईजी पुनर्स्थापना के पश्चात किसानों को भूस्वामित्व सौंपा गया। 1872 ई० तक जमीनों पर कृषकों का पूर्णतः अधिकार स्थापित हो गया। मगर कृषकों से बलपूर्वक कर वसूलने की परिपाटी आरम्भ होने से कृषक परेशान हुए। 1873 ई० से 1880 ई० तक लगभग लाखों कृषकों से बलपूर्वक प्रयोग कर कर वसूल किया। कुछ किसानों को तो कर चुकाने हेतु अपनी जमीनें तक बेचनी पड़ी। इस जमीन को जमींदारों ने खरीद लिया।

Ashish

प्रथम युद्धकाल में जापान :-

प्रथम विश्व युद्ध के काल में जापान के निर्यात व्यापार में असाधारण वृद्धि हुई। इस काल में जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस आदि पाश्चात्य देश एशिया के देशों में तैयार माल भेजने की स्थिति में नहीं थे। इस प्रकार स्थिति का लाभ जापान ने उठाया। उसने बड़े परिमाण में तैयार माल भारत, बर्मा, डच ईस्ट-इंडीज आदि को भेजा। इससे निर्यात बढ़ा और जापान का व्यावसायिक उत्कर्ष हुआ। मांग इतनी बढ़ गई थी कि जापान सम्पूर्ण उत्पादन क्षमता का प्रयोग करके भी निर्यात को पूरा नहीं कर पा रहा था। उदाहरण के लिए- 1911 ई० से 1914 ई० के वर्षों में आयात से निर्यात की अपेक्षा 8 करोड़ 80 लाख येन की वृद्धि प्रतिवर्ष हो रही थी।

जापान की जहाजों की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। 1914 ई० में जापानी जहाजों ने 15 लाख टन माल की ढुलाई की।

युद्ध के बाद जापान की आर्थिक स्थिति :-

(i) सूती वस्त्र व्यवसाय में 1931 ई० जापान विश्व में तीसरे नम्बर पर था।

(ii) 1928 ई० में जापान विश्व का दो-तिहाई रेशम का उत्पादन कर रहा था।

(iii) 1929 ई० में व्यापारिक जहाजों के निर्माण में विश्व के तीसरे नम्बर पर था।

(iv) विद्युत उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। 1920 ई० में कुल विद्युत उत्पादन 4,699 मिलियन किलोवाट था जो 1935 ई० में बढ़कर 24,698 मिलियन किलोवाट हो गया था।

(v) भारी एवं रसायन उद्योग 1930 ई० में कुल औद्योगिक उत्पादन का 33% था जो 1940 ई० में 59% हो गया था।

कृषि :- जापान को कृषि क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ा। विशाल पैमाने पर औद्योगिकरण होने से श्रमिकों की संख्या में असाधारण रूप से वृद्धि हुई थी। युद्ध में मांग इतनी अधिक थी कि खाद्य उत्पादन इस मांग को पूरा नहीं कर सकते थे।

Ashish

खाद्य पदार्थों के मूल्यों में इतनी वृद्धि हो गई थी कि 1918 ई० में चावल के मूल्य को लेकर दंगे हुए फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किसान निर्धन थे। सरकार केवल सम्पन्न लोगों की हितों की रक्षा करती थी।

दोहरे ढाँचे का निर्माण :-

जापान की अर्थव्यवस्था में दोहरे ढाँचे का निर्माण हो गया था।
यह औद्योगीकरण के कारण हुआ था। जापान में एक ओर औद्योगीकरण के कारण कारखानों की स्थापना हो रही थी। जिसमें बड़ी संख्या में श्रमिक यंत्रों पर कार्य कर रहे थे।
दूसरी ओर परम्परागत कुटीर धन्धे थे। पहले ढाँचे में पूँजी की प्रधानता थी, दूसरे ढाँचे में श्रम की प्रधानता थी।
पहले में मजदूरी अधिक थी, दूसरे में मजदूरी कम थी। वास्तव में इसी दोहरी प्रणाली को अर्थशास्त्र की भाषा में दोहरा ढाँचा कहा गया है।
1927 ई० के बाद जापान को जिस आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, उसका संबंध पहले औद्योगिक ढाँचे से था। निर्यात कम होता जा रहा था। जापानी उद्योगों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी, जिसका आयात किया जाता था। तैयार माल के लिए बाजारों की आवश्यकता थी। संक्षेप में 1919 ई० के बाद जापान के उद्योगों की आवश्यकता इतनी बढ़ गई थी कि अन्ततः जापान को साम्राज्यवादी नीति अपनानी पड़ी।
वस्तुतः जापानी उद्योगों का जापान के सैनिकवाद के उत्थान से सीधा संबंध था।

Ashish